

श्री. कालू ५ वन
२९-५-५६

जीयमान -

श्री. कालू ना. क. लेब (नो. एच. एंड. सी. ला. ए.) , गोविंदम जामजी रोड.

विशेषतः हेतु के सम्बन्धित इत्तीफा दिने आज पूरे २० दिन हो गये हैं। मैं तथा मेरे अनेकानेक सुद्वीपर सह रहा हूँ। इसकी-न आपने कष्टकाट मुझे बुझाया नहीं है और तबलेट इत्तीफा बाधित करने का आग्रह भी किया है। मैं भी उलासित हो (नो. एच. एंड. सी. ला. ए.) का नाम के पास लिखवा आता हूँ। आज पूरे १५ दिनों तक अरुनिशा खोपरी के बाद जो निश्चयम भिन्ना, वट केदिनि प्रस्तुत किया जाता है:-

मैं अपने जीवन के, खालक (कार्य-कर्म) के दिनांशको ५५ साल इस निश्चय के पढ़ेगा हूँ कि दिन प्रतिदिन कोट्टिमिक विडाकता संकली थी जाती है, आर्थिक-तकट निकट बस आता-बता जाता है और शारीरिक तथा मानसिक दृष्टिको दिनांश दिन शरीर होती-रही जाती-थी और उल्लेखन के मानसिक अशांति और शारीरिक निश्चयता संकली जाती-थी हेतु तब मैंने जहाँ-जहाँ मुझ शरीर को आशुता के साथ अपने जीवन के ध्येयपर दृष्टि डालता हूँ तो श्रेयता ही जाता हूँ (सम्बन्धितों को सुगत करके पढ़ेगा देख कर और दिनांशिका उठता हूँ अपनी उम्र उल्लेखनी हुलकों को दूर करने के लिए- जो कि काम, जिन्के कि लिखने में मैं जीवन्ता के सुगत की-परी लोभ लागता है और शक्ति-वैरा-धन-धन भिन्ना ही, मैं आदर हूँ कि यदि आपों को सुगत में भी लाने लूँ तो काम ही काम जो ये अपेक्षी की- सुठे, उमाके के काली उमा (इरा-इरा) अपनी परवासे हूँ।

मुझे भी यही आशुवेदना एक क्षण के लिए भी निश्चय नहीं थी कि मैंने इस उल्लेखनी हुलकों के लिए अनेक रूप-रंगों के लिए मुझे अपने-अपने एक-एकका लक्ष आशुयुक्त ही और इच्छे भी काचित्तु शक्य एक ही काली दिशाएँ संरक्षती-मदन की उमा-इरा, जहाँ कि बरतनर लक्ष्यक प्रयोगों के सम्बन्ध में अपना कार्य का लूँ।

दिनांशिका (उमा-इरा) निराशुफ (उरुने) दिनांशिका प्रभा भी (मानने) है, इस सम्बन्धित सम्बन्धों में निश्चयता ही मैं ही निश्चयित हूँ:-

(१) आप अपने पक्षों ही मुझे पूरे एक-एकका अर्थान्तिक अर्थता शक्य हैं और (२) हेतु-काम-धन-दिनांश (सम्बन्धितों-मदन) अर्थता एक-एकके विधि मेरी लयेतन उमा-इरा निश्चयिक कर देंगे।

मैंने उमा-इरा के बीच किर १५-१५ दिनांशों को (उमा-इरा) वट केदिनि १५-१५ दिनांशों को (उमा-इरा) और इत्तीफा के दिनांशों की निश्चयता सम्बन्धित सम्बन्धित लयेतन गे लूँ, उमाके लिए वट केदिनि लयेतन है, आशा है कि उमा-इरा